

16⁵/₁₈

पञ्चमली कर्म काण्ड में प्रेशा सुद्धि (प्राविशरीगण
काते नाः पञ्चमली वाक् स्यात् जिनेषाणा मे पञ्चम
विधा गाना हीनि को विधाश्रीन शाशनी को भीका
न सदास्य शिवाहे को मया (मिसे) बगधे सवे ()
पञ्चमली धीलन सुभाष सुभाष गम्यर मे काश ही
नया वाक् नमनीन गोषव गच्छर (संवत्त वाक् ही)
०५